दिल्ली-NCR के बॉर्डर पर बैठे किसान आंदोलन का बदलता अंदाज

सदियों की परंपरावादी कृषि व्यवस्था में व्यापक सुधार के कानूनी प्रयास से किसान का विचलित होना कोई आश्चर्य नहीं था, अपितु यह एक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थी। परंतु इससे महत्वपूर्ण इस कानून की वह पृष्ठभूमि थी जिसमें ये कानून अस्तित्व में आए। यह पक्ष एवं विपक्ष दोनों के लिए ही विशेष परिस्थिति थी। राजग के दूसरे कार्यकाल के प्रारंभ से ही भाजपा सरकार प्रचंड बहुमत के बल पर देश के महत्वपूर्ण लंबित मामलों को निपटाने में तत्परता से आगे बढ़ गई थी। अनुच्छेद ३७० का निरस्तीकरण, तीन तलाक की समाप्ति एवं नागरिकता संशोधन अधिनियम जैसे महत्वपूर्ण कानून बनाने के उपरांत सरकार का साहस और आत्मविश्वास दोनों ही लबालब थे। इसके विपरीत, विपक्ष हताश व निराश था। इन दोनों ही कारकों ने किसान आंदोलन को वर्तमान स्वरूप में लाने में अपनी भूमिका अपने अपने तरीके से निभाई। जहां सरकार के आत्मविश्वास ने फैसलों को सख्ती से लागू करने की दृढ़ इच्छाशक्ति दी, वहीं विपक्ष भी स्वयं को पुनर्जीवित करने के मौके को भुनाने के लिए कटिबद्ध दिखाई दिया। सरकार इन कानूनों के प्रति आश्वस्त होते हुए इन पर दृढ़ता से आगे बढ़ने के फैसले पर अडिग रही। वहीं विपक्ष ने संयुक्त रूप से इस आंदोलन के पीछे अपनी पूरी ताकत झोंकते हुए इसे एक अवसर में परिवर्तित करने के लिए कोई कसर नहीं छोड़ी। विपक्ष को किसान की बेचैनी ब्रह्मास्त्र के रूप में प्राप्त हुई और उसकी सभी विचारधाराएं, संसाधन तथा शक्तियां इसी पर आकर केंद्रित हो गई। परंतु आंदोलन के प्रारंभ में विपक्ष द्वारा मिली व्यापक ऊर्जा के उपरांत भी इस आपाधापी में आंदोलन में कई ऐसे कारक अनायास ही प्रवेश करने में सफल हो गए जिनकी नजरें व निशाने भिन्न थे और यह आंदोलन अंततः उन्हीं का शिकार हो गया। महात्मा गांधी के सत्याग्रह की तर्ज पर जिस किसान आंदोलन की घोषणा हुई थी उसका मूल उद्देश्य नेपथ्य में चला गया और उसकी जगह आंदोलन में हिंसा, अराजकता और अतिउत्साह ने ले लिया। जिस आंदोलन का गैर राजनीतिक होने का दावा किया जा रहा था वह अंदर एवं बाहर दोनों तरफ से राजनीति के शिकंजे में कैद होकर रह गया। आंदोलन के अंदर बैठी राजनीति ने इस आंदोलन की आड़ में अपना एजेंडा बखूबी आगे बढ़ाया। आंदोलन पंजाब की सीमाओं से निकलकर हरियाणा होता हुआ जब दिल्ली तक पहुंचा तो इस यात्रा में ही इसका आक्रामक स्वरूप स्पष्ट दिखाई देने लगा। यह संकेत स्पष्ट था कि यह सत्याग्रह एक ऐसे संघर्ष में परिवर्तित होने जा रहा था जिसमें शक्ति प्रदर्शन मूल मंत्र के रूप में काम करने वाला था। दिल्ली पहुंचते ही किसान नेतृत्व इसी शक्ति के नशे का शिकार होने लगा। उसने अपने ही तरीके से ऐसे आदेश जारी करने शुरू कर दिए जिनमें कानून व्यवस्था एवं

मर्यादा पीछे चली गई। राष्ट्रीय राजमार्गों पर मात्र धरना नहीं था, अपितु आधुनिक सुविधाओं से युक्त एक ऐसी व्यवस्था थी जिसमें देश के कानून को सीधा ठेंगा दिखाया गया। एक तरफ सरकार के साथ बातचीत चलती रही तथा दूसरी ओर धमकी भरी घोषणाएं जारी होने लगीं। अलग-अलग किसान नेता अपने अपने तरीके से शक्ति प्रदर्शन में जुट गए। इन सबसे एक ऐसा परिवेश तैयार किया गया जहां यह आंदोलन अपनी बात रखने तक सीमित रहने की अपेक्षा अपना कानून खुद बनाते व लागू करते दिखाई दिया। इस अवसर पर सरकार की खामोशी ने आंदोलनकारियों के हौसलों को पंख लगा दिए। कानून का डर समाप्त हो गया और गणतंत्र दिवस के अवसर पर लाल किले की घटना अनियंत्रित शक्ति प्रदर्शन की पराकाष्ठा थी। इस सारे घटनाक्रम ने जाने अनजाने में आंदोलन से सत्याग्रह की शक्ति छीन ली। प्रारंभ में जन सहानुभूति के साथ जन्म लेने वाला यह आंदोलन जन भावना से दूर होता गया। यह आंदोलन राजनीतिक सत्ता संघर्ष के रास्ते पर चला गया। किसान की शंकाओं को दूर करने के लिए उसमें समाधान की बात न करके किसान नेतृत्व कानून वापसी की जिद पर अटक कर रह गया। वे इस बात को भूल गए कि कानून सरकारें वापस लेने के लिए नहीं लेकर आती हैं। किसान नेतृत्व सरकार की सहनशक्ति और धैर्य को सरकार की कमजोरी व अपनी शक्ति समझने लग गया। परंतु सहनशक्ति कभी कमजोरी नहीं, अपितु सशक्त अस्त्र होता है। आंदोलन का नेतृत्व इस बात को समझ नहीं पाया कि मर्यादा समाज की धरोहर है और जब भी कोई व्यक्ति या समूह मर्यादाओं से बाहर निकल स्वयं शक्ति का प्रदर्शन करता है तो समाज की उससे दूरी स्वतः बन जाती है। सरकार ने बातचीत का बार-बार अवसर देकर यह संदेश दिया कि वह किसान के प्रति संवेदनशील है और उसकी हर समस्या के समाधान के लिए तत्पर है। परंतु कानून की कमियां बताने की बजाय किसानों का केवल उसे वापस कराने की जिद से आम जनमानस में यह संदेश गया कि किसान नेताओं के पास कानून में कमी बताने के लिए कुछ है ही नहीं और कानून को वापस कराने की केवल मात्र जिद है। धीरे-धीरे यह आंदोलन ऐसी स्थिति में आकर खड़ा हो गया जहां किसान नेतृत्व का अहम आंदोलन से बड़ा हो गया और यह उनकी प्रतिष्ठा से चिपक गया।

महाआपदा का दौर: इस्त्राइल और ब्रिटेन से सीख लें

इस महाआपदा के दौर में दो घटनाओं और उनसे जुड़ी कुछ तस्वीरों ने पूरी दुनिया का ध्यान खींचा है। भारत का तो विशेषकर। इसमें पहली घटना थी, इस्त्राइल में मास्क की अनिवार्यता को खत्म करना। इस्त्राइल की एक ३५ वर्षीय महिला ने अपना मास्क हटाते हुए जिस तरह का वीडियो पोस्ट किया, उसका संदेश यही था कि देखो हमने कोरोना पर विजय पा ली है। कुछ दूसरी तस्वीरें अलग-अलग रूपों में ब्रिटेन से आईं। लंबे समय बाद १२ अप्रैल को पूर्व घोषणा के अनुसार जिम, पब, सैलून आदि खोले जा चुके हैं। कोरोना आपदा से जुड़ी पाबंदियां काफी कम होने के बाद वहां के लोग जिस तरह पब, रेस्तरां, सांस्कृतिक केंद्र, थिएटर आदि में एकत्रित होते दिख रहे हैं, उनका संदेश भी यही है। हालांकि ब्रिटेन ने अभी कोरोना से पूरी तरह मुक्त होने की घोषणा नहीं की है, पर सरकार और स्वास्थ्य विभाग की ओर से देश भर में संदेश चला गया है। इस्त्राइल दुनिया का पहला देश बना है, जिसने स्वयं को कोरोना मुक्त घोषित किया है। विश्व के ज्यादातर देश ऐसी घोषणा करने का साहस नहीं कर पा रहे। निस्संदेह, ये दृश्य हम भारतीयों को ललचाने वाले हैं। हमारे मन में भी प्रश्न उठ रहा है कि कब हम इस्त्राइल या ब्रिटेन के लोगों की तरह फिर से खुलकर जीवन जी सकेंगे? यहीं पर इस्त्राइल के चरित्र को समझना जरूरी हो जाता है। रेगिस्तान के बीच बसाए गए इस छोटे से देश ने अपने परिश्रम, अनुशासन, समर्पण और दृढ़ संकल्प के साथ न सिर्फ अपनी धरती को हरियाली से लहलहाया, बल्कि अनेक मामलों में विश्व के विकसित देशों के समानांतर स्वयं को खड़ा किया। कोरोना में भी पूरे देश ने ऐसा ही अनुशासन दिखाया। एक बार मास्क लगाने की घोषणा हो गई, तो फिर किसी ने उस पर प्रश्न नहीं उठाया। लोगों ने सामाजिक दूरी का पूरी तरह पालन किया। इसके लिए वहां की पुलिस, सेना या सरकार

की अन्य एजेंसियों को हमारे देश की तरह कसरत नहीं करनी पड़ी। क्योंकि सबका अंतर्भाव यही था कि एक देश के रूप में हमें कोरोना पर विजय पाना है। इसी तरह उसने टीकाकरण अभियान चलाया। आज वहां १६ से ८० वर्ष तक के ८१ प्रतिशत लोगों का टीकाकरण हो चुका है। ब्रिटेन ने भी कोरोना आपदा का कम संघात नहीं झेला है। वहां के राजपरिवार के सदस्य, प्रधानमंत्री सहित कई मंत्री, संसद सदस्य, उच्च अधिकारी कोरोना संक्रमित हुए, उनमें से कई की जानें भी गईं। लंबे समय तक देश में कोहराम मचा रहा। ब्रिटेन भी ऐतिहासिक रूप से एक अनुशासित देश रहा है। हालांकि पिछले कुछ वर्षों में उसके राष्ट्रीय अनुशासन में कमी आई है। ब्रिटेन तीन बार में १३५ दिनों का सख्त लॉकडाउन लागू करने वाला देश है। इतनी बड़ी अवधि का लॉकडाउन झेलना कितना कठिन होगा, यह हम भारतीयों से बेहतर कौन जान सकता है! ध्यान रखिए, कोरोना वायरस के जिस घातक वेरिएंट की बात भारत में हो रही है, उसका उद्भव ब्रिटेन से ही पता चला था। ब्रिटेन ने उस वेरिएंट पर लगभग काबू पा लिया है। अगर ब्रिटेन ऐसा कर सकता है, तो हम क्यों नहीं? अगर इस्त्राइल कोरोना मुक्त हो सकता है, तो भारत क्यों नहीं? इन प्रश्नों का उत्तर हमें तलाशना होगा। निस्संदेह, इस्त्राइल और ब्रिटेन भारत की तुलना में अत्यंत कम आबादी वाले देश हैं। इस्त्राइल की कुल जनसंख्या ९३ लाख के आसपास होगी। इसी तरह ब्रिटेन की आबादी सात करोड़ से नीचे है। वास्तव में हम उस तरह का राष्ट्रीय संकल्प और उसके प्रति दृढ़ अनुशासन नहीं अपना पाते, क्योंकि उस तरह का भाव हमारे यहां स्वाभाविक रूप से विद्यमान नहीं है। निस्संदेह, केंद्र एवं राज्य सरकारों के कोरोना प्रबंधन में भारी कमियां दिखती रही हैं। सरकार को हम दोष दे सकते हैं, लेकिन क्या समाज के अंग के रूप में हम सबने कोरोना पर सजगता संकल्प और अनुशासन दिखाया है, जैसा इस्त्राइल और ब्रिटेन और कुछ दूसरे देशों में देखा गया? यकीन मानिए, हम भी इन देशों की श्रेणी में शीघ्र खड़े हो सकते हैं, यदि केंद्रीय सत्ता से लेकर राज्य सरकारें, स्थानीय शासन, धार्मिक-सांस्कृतिक-सामाजिक-व्यापारिक समूह और शैक्षणिक संस्थानों सहित एक-एक भारतीय कोरोना पर विजय के राष्ट्रीय लक्ष्य के अनुरूप खुद को समर्पित कर दे।

Coronavirus मरीजों की मदद के लिए अब सुनील शेट्टी ने बढ़ाया हाथ, एक्टर मुफ्त में मुहैया करवा रहे हैं ऑक्सीजन

नई दिल्ली। कोरोना वायरस की दूसरी लहर ने देश में हाहाकार मचा दिया है। हर रोज लोग इससे संक्रमित होते जा रहे हैं। वहीं इस महामारी से मरने वालों की संख्या में हर दिन बढ़ोतरी देखने को मिल रही है। इन सबके बीच बॉलीवुड के कई सितारे कोरोना वायरस की मार झेल रहे मरीजों की मदद के लिए आगे आए हैं। इनमें मशहूर अभिनेता सुनील शेट्टी का नाम भी शामिल हो गया है। इस बात की जानकारी दिग्गज अभिनेता ने खुद सोशल मीडिया के जरिए दी है। सुनील शेट्टी कोरोना वायरस से पीड़ित मरीजों को मुफ्त में ऑ ?सीजन कन ?सन ?ट्रेटर्स मुहैया करवाने की मुहिम में जुड़ गए हैं। उन्होंने सोशल मीडिया पर एक पोस्ट साझा कर परेशान लोगों की मदद करने का एलान किया है। इतना ही नहीं सुनील शेट्टी ने अपने फैंस और अन्य लोगों से भी कोरोना वायरस

से पीड़ित लोगों की मदद करने की अपील की है। सुनील शेट्टी ने अपने आधिकारिक ट्विटर अकाउंट पर लिखा, हम कठिन समय से गुजर रहे हैं लेकिन हमारे लोगों ने एक-दूसरे की मदद को हाथ आगे बढ़ाया है जो कि उ ?मीद की किरण है। उन्होंने अपने ट्वीट के जरिए बताया कि वह केवीएन फाउंडेशन से जुड़े हैं और लोगों को मुफ्त में ऑक्सीजन कन ?सन ?ट्रेटर्स मुहैया करवा रहे हैं। अपने अगले ट्वीट में सुनील शेट्टी ने फैंस से भी लोगों की मदद करने की अपील की है। सुनील शेट्टी ने अपने अगले ट्वीट में लिखा, सभी दोस ?तों और फैंस से अपील है कि अगर मदद की जरूरत है। अगर आप जानते हैं कि किसी को मदद चाहिए या अगर आप इस मिशन से जुड़ना चाहते हैं तो सीधे मैसेज करें। कृपया इसे ज ?यादा से ज ?यादा लोगों तक पहुंचाएं और लोगों की सहायता करने में हमारी मदद करें। सोशल मीडिया पर सुनील शेट्टी के यह दोनों ट्वीट तेजी से वायरल हो रहे हैं।